खुशी की खुराक खाते रहो
चलते-फिरते पैदल ही खुशी से बाप को याद करो
श्रीमत पर चल विकर्म विनाश करो
रहमदिल बन पढ़ो और पढ़ाओ
रजिस्टर ख़राब नही करो
बुद्धि को पतित बन मलीन नही बनाओ
जो कर्म कर फिर पश्चाताप हो
आदि रत्न अर्थात प्रभु रत्न..ईश्वरीय रत्न
आदि देव के बच्चे मास्टर आदि रत्न की स्मृति रखो
तो समर्थ भव का वरदान प्राप्त होगा
और व्यर्थ भी नही आयेगा
ज्ञानी तू आत्मा सदा धोखे से स्वयं को बचता

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!